International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 4; Issue 6; November 2018; Page No. 78-80

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का छात्र सम्बन्धी दृष्टिकोण

मनोज जोशी
शोध छात्र, शिक्षासंकाय, एस०एस०जे० परिसर, अल्मोड़ा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखंड, भारत।

सारांश
डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम हमारे देश के महानतम् वैज्ञानिकों में से एक हैं। उनका जीवन संघर्षों के बीच पला, बड़ा एवं उन्नति के शिखर तक पहुँचा। इन्हें भारत के ''मिसाइल मैन'' के नाम से भी जाना जाता है। हमारे देश के 11वें राष्ट्रपति के के रूप में भारत का प्रथम नागरिक होने का भी गौरव इन्हें प्राप्त हुआ। डॉ० कलाम भारत के सबसे प्रिय राजनेता थे। यह एक कुशल विचारक, लेखक, वैज्ञानिक, सफल राजनीतिज्ञ, व शिक्षक होने के साथ–साथ मृदुभाषी व सादगी से परिपूर्ण थे। छात्र के विकास में परिवार की भूमिका को अहम् बताते हुए डॉ• कलाम कहा करते थे कि ''प्रथम गुरू माता होती है जो सही एवं गलत की पारखी होने के साथ–साथ सही एवं गलत को परखने का हुनर प्रदान करती है मैंने स्वयं माता जी द्वारा प्रदान की गयी शिक्षा के कारण ही जीवन में सफलताऐं अर्जित की हैं पिता जी का संघर्षमय जीवन ने मुझे जीवन में संघर्ष करने की शिक्षा प्रदान की। हम परिवार से जो भी शिक्षा अर्जित करते हैं वही हमारा वर्तमान और भविष्य का निर्धारण करती है।''

मूल शब्द : शिक्षा, छात्र सम्बन्धी दृष्टिकोण, डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम।

प्रस्तावना
शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके ह्रदय में देश–प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्जवलित हो जाती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है उसी प्रकार शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। अशिक्षित रहने पर दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के अन्धकार में डूबा रहता है। इससे वह समाज का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुनः स्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है जिस प्रकार एक ओर शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी, चरित्रवान, विद्वान् तथा वीर बनाती है उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति की भॉति समाज भी शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता हैं।

कलाम और बच्चे
भारत रत्न, महान विचारक, विद्वान, विज्ञानविद् और उच्चकोटि के इंसान भारत के राष्ट्रपति पद को गरिमा देने वाले हम सबके प्यारे मिसाइल मैन, डॉ• ए• पी• जे• अब्दुल कलाम को अक्सर बच्चों के बीच मुस्कराते हुए देखा गया। अपने कार्यकाल में वो लाखों बच्चों से मिले। जब भी कलाम साहब कहीं बाहर जाते, उनके कार्यक्रम में बच्चों से मिलने का एक कार्यक्रम जरूर होता था। आज जब हम सोचते हैं तो, बच्चों से घिरे कलाम साहब का एक ऐसा चेहरा नजर आता है, जो स्वयं की मुस्कान संग लाखों–करोड़ों बच्चों के लिये खुशियों का पैगाम है। उनकी उपस्थिति बच्चों में एक नई उमंग का प्रचार कर दिया करती थी और आज भी उन्हें प्रेरणा देती है। कलाम साहब का मानना था कि बच्चे ऊर्जा के अनंत स्त्रोत हैं। बच्चे प्रकृति से जुड़े होते हैं। अपनी निश्छल आवाज, विश्वास और कल्पनाओं के साथ अनंत ऊर्जा का प्रवाह करते हैं। वे बच्चों की प्राकृतिक ऊर्जा के रहस्य को भली–भाँति समझते थे। कलाम साहब अपने बचपन को याद करते हुए अपनी पुस्तक ''अग्नि की उड़ान'' में लिखते हैं–

''मैं अपने पिता की उंगली पकड़कर घर से मस्जिद की गली तक जाया करता था। मस्जिद में जब मेरे पिता जी नमाज पढ़ते तो मैं उन्हें देखा करता था। मेरे मन में ये सवाल उठता था कि, पिता जी नमाज क्यों पढ़ते हैं? मस्जिद क्यों जाते हैं? नमाज पढ़ने से क्या होता है? और सब लोग नमाज क्यों नहीं पढ़ते? नमाज के बाद जब पिता जी मस्जिद के बाहर आते तो लोग कटोरों में जल लिये उनकी ओर बढ़ते थे। मेरे पिता जी उस जल में अपनी उंगलियाँ डालते और फिर कुछ मंत्र पढ़ते और फिर कहते कि ले जाओ इसे, मरीज को अल्लाह का नाम लेकर पिला दो, वो ठीक हो जायेगा। लोग वैसा ही करते तथा अगले दिन आकर पिता जी का शुक्रिया करते और कहते कि खुदा की रहमत हो गई मरीज ठीक हो गया। मैं इतना छोटा था कि इन सब बातों का अर्थ समझ नहीं पाता था। किन्तु इतना जरूर लगता था कि जो भी हो रहा है किसी अच्छे उद्देश्य के लिए हो रहा है। जब मैं अपने पिता जी प्रश्न करता था तो वह बड़े सहज और सरल भाव से मेरे हर प्रश्न का जवाब देते थे।''

कलाम साहब का कहना है कि '' बचपन में पिता के साथ बीता वह पल मेरे लिये खास है और आज उनके सकारात्मक अनुभव की वजह से ही मैं आज बच्चों के उत्तर सरलता से दे पाता हूँ।''

डॉ• कलाम ने बच्चों के बीच बिताए अनुभव के आधार पर अंग्रेजी में "Ignited minds" नामक एक पुस्तक लिखी, जिसे ''तेजस्वी मन'' शीर्षक से हिन्दी में प्रकाशित किया गया। कलाम साहब ने एक महत्वपूर्ण फैसला लेते हुए तय किया कि वे भारत की सच्ची तस्वीर को यहाँ के बच्चों में तलाशेंगे। उनका मानना था कि वैज्ञानिक कैरियर, पद एवं पुरस्कार सब कुछ बच्चों के आगे गौण हैं। कलाम साहब सभी अभिभावकों को ये संदेश देते थे कि बच्चों की जिज्ञासा को एवं उनके बाल सुलभ एवं सहज प्रश्नों का उत्तर

देने का हर संभव प्रयास किया करना चाहिये। उनकी ये दिली ख्वाहिश रहती थी कि वे बच्चों के बीच जायें और उन्हीं की तरह सरह एवं सहज बनकर उनसे बात करें। न कोई औपचारिकता हो न कोई बंधन। एकबार एक व्यक्ति ने उनसे पूछा कि, आप इतने बड़े वैज्ञानिक हैं तथा राष्ट्रपति जैसे गरिमामय पद पर आसीन होते हुए बच्चों के लिये इतना समय कैसे निकाल लेते हैं? ऐसा क्या मिलता है आपको उनसे? कलाम साहब ने कहा कि, ''बच्चों के स्तर पर उतर कर मेरे मन में नई–नई उमंगें हिलोरे लेने लगती हैं। दुनियां का कोई भी काम मुझे मुश्किल नहीं लगता। मेरे हौंसले आसमान छूने लगते हैं। बच्चों से बात करके, उनकी आँखों में आँखें डालकर उनके भावों के साथ एकाग्रता स्थापित करते ही, तन–मन में एक अद्‌भुत ऊर्जा का संचार होने लगता है।''

डॉ• कलाम साहब अक्सर कहा करते थे कि

''सपने वे नहीं होते जो नींद में देखते हैं,
सपने वो होते हैं जो नींद न आने दें।''

इसी सपने की बात पर एकबार एक बच्चे ने कलाम साहब से पूछा कि, ''सर मैंने आपकी ''अग्नि की उड़ान'' पुस्तक पड़ी आप हमेशा सपने की बात क्यों करते है?''
कलाम साहब ने उत्तर देते हुए कहा कि, ''पहले तुम तीन बार स्वप्न, स्वप्न, स्वप्न बोलो। तुम पाओगे कि स्वप्न से ही विचार करते हैं और विचार बनते हैं और विचार कर्म के रूप में बाहर आते हैं। यदि स्वप्न नहीं होंगे तो क्रान्तिकारी विचार भी जन्म नहीं लेंगे। डॉ• कलाम साहब की स्वप्न कविता की कुछ पंक्तियां–

'स्वप्न स्वप्न स्वप्न?
स्वप्नों में छिपा है सृजन
स्वप्नों में है मूर्त छवि
होते विचार हैं
जिनसे जन्मा कर्म
करता निर्माण है।''

बच्चों से मुलाकात के दौरान एक बार एक बच्चे ने पूछा कि ''सर आप जैसा वैज्ञानिक बाहरी व्यक्तित्व को महत्व क्यों नहीं देता?
प्रश्न सुनकर कलाम साहब ने कहा, मुझे 1980 की एक बात याद आ रही है। मैं वो बताता हूँ। शायद उस वाक्य में तुम्हें तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल जाये। 1980 में एसएलवी 3 से रोहिणी नामक रॉकेट को सफलता पूर्वक लॉन्च किया गया था। मैं एसएलवी–3 का परियोजना निदेशक था। इसरो के प्रमुख डॉ• सतीश धवन ने मुझे संदेश भेजा कि प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की उपस्थिति में एक बधाई समारोह आयोजित किया गया है। अतः तुम तुरन्त दिल्ली के लिए रवाना हो जाओ। तब मैंने झिझकते हुए डॉ• धवन को बताया कि, मेरे पास कोई शूट या बूट नहीं है। मैं पैंट शर्ट व चप्पल में कैसे जाऊँ? तब डॉ• सतीश धवन ने कहा–
''कलाम तुमने विजय का परिधान पहन रखा है। तुमको चिंता करने की जरूरत नहीं है।''
एक अन्य बच्चे ने पूछा, ''सर क्या आप प्रश्नों के रूप में बच्चों द्वारा दागी गई मिसाइल से डरते हैं?
डॉ• कलाम ने उत्तर दिया– ''मिसाइल मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । मैं प्रश्नों की मिसाइल से तनिक भी नहीं डरता। बच्चे जब प्रश्न पूछते हैं तो मुझे खुशी होती है। आप सबके प्रश्न तो सच्चाई का आभास कराते हैं और संदेश देते हैं कि हम जीवन की सच्चाईयों से भागे नहीं बल्कि उनका जमकर मुकाबला करें।''
डॉ0 कलाम साहब का कहना है कि, ''व्यक्ति, परिवार और समाज के केन्द्र में सबसे महत्वपूर्ण ईकाइ बच्चे हैं। बच्चों को केन्द्र में रखकर सोचने पर हमारी सोच सकारात्मक हो जाती है। हम उन गुनाहों को करने में झिझकते हैं जिनके कारण बच्चों के जीवन तबाह हो जाते हैं।''
स्वामी विवेकानन्द जी भी कहते हैं किः– ''मानवता का संचार उनके ह्रदयों में नहीं होता जो सच्चाई छिपाते हैं और गलतियॉ करते हैं, यह केवल ह्रदय में होता है जो मन के सच्चे और भोले होते हैं, बिल्कुल बच्चों की तरह, अतः जब तुम तय न कर पाओ जो तुम करने जा रहे हो वह सही है या गलत तो बच्चों के पास जाओ– वे बता देंगे सही क्या है?''
डॉ0 कलाम बच्चों के दिलों के साथ अपने दिल के तार इतनी सरलता से जोड़ लेते थे कि विश्वास करना कठिन हो जाता था। ये कहना अतिश्योक्ति न होगा कि, बच्चों को जीवन की धुरी मानने वाले डॉ0 कलाम साहब का जीवन अनुभवों पुस्तकालय है, उनके जीवन से आज भी हम सब ऊर्जावान हो रहे हैं। बच्चों को भारत का भविष्य मानने वाले और बच्चों की कल्पनाओं को नित नई ऊंचाई देने वाले ऊर्जावान कलाम साहब आज भी भारतीय समाज के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव समाज के लिए अनमोल विरासत है।

बच्चों के बीच कलाम

डॉ• कलाम के जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष उनका बच्चों की क्षमताओं में अटूट विश्वास करना है। बड़े वैज्ञानिक तथा राष्ट्रपति जैस महत्वपूर्ण पद पर रहते देश के विभिन्न भागों में जाकर बच्चों से बातें करना उनके प्रश्नों के उत्तर देना, उनके मन में देश के प्रति प्रेम व निष्ठा उत्पन्न करना, देश व काल की वास्तविकताओं से अवगत कराना, बच्चों की आँखों में, मजबूत व विकसित भारत के सपने पिरोना किसी सामान्य व्यक्ति के बूते की बात नहीं है।

डॉ• कलाम अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकाल कर देश के हजारों बच्चों के बीच गए हैं। बच्चों की बातें सुनी हैं। उनके सैकड़ों प्रश्नों के उत्तर दिये है। डॉ• कलाम जिस सहजता से विज्ञान का परिचय बच्चों से करवाते थे वह अनुकरणीय हैं। एक बार एक बच्चे ने उनसे पूछा कि दुनियाँ का पहला वैज्ञानिक कौर रहा होगा, डॉ• कलाम ने कहा कि जिज्ञासु प्रश्न ही विज्ञान की नींव है। बच्चे ही प्रश्न अधिक पूछते हैं अतः विश्व का पहला वैज्ञानिक कोई बच्चा ही रहा होगा। डॉ• कलाम का बच्चों से कहना

है कि प्राचीन भारत ज्ञान से परिपूर्ण समाज था और कई बौद्धिक अभियानों, विशेषकर गणित, चिकित्सा और खगोल विद्याा के क्षेत्र में भारत ने विश्व का नेतृत्व किया है। उच्च तकनीक के क्षेत्र में सस्ता श्रम उपलब्ध कराने के बजाय भारत को एक बार फिर ज्ञान के क्षेत्र में परम शक्ति बन कर उभरने के लिए पुनर्जागरण करना है।

निष्कर्ष

डॉ• ए•पी•जे• अब्दुल कलाम एक वैज्ञानिक एवं भारत के 11वें राष्ट्रपति थे। इन्हें पूरे विश्व में मिसाइल मैन के नाम से जाना जाता है। इन्होंने राष्ट्रपति पद पर रहते हुए भी एक शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाई। विभिन्न संस्थानों में आयोजित व्याख्यान सम्बन्धी कार्यक्रमों में एक कार्यक्रम छात्रों से मिलने का आवश्यक रूप से पूर्वनिर्धारित होता था। बच्चों से इन्हें अथाह प्रेम था। डॉ• कलाम के अनुसार– बच्चे शक्तिपुंज हैं इनमें अपार व दिव्य शक्ति विद्यमान होती है इन्हें शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक रूप से परिपक्व करना व उचित दिशानिर्देशन देना ही हमारा एकमात्र कर्तव्य होना चाहिए। उनमें अपार उमंगें हैं वो सपने हैं जिन्हें वो पाना चाहते हैं जिनमें वो आसमां छूना चाहते हैं। डॉ• कलाम का व्यक्तित्व, वास्तव में बच्चों का हम सभी का आदर्श व प्रेरणास्त्रोत है।

सन्दर्भ सूची

1. कुमार, एस (2016), स्प्रिचुअलिटी साइन्स एण्ड एचीवमेंट ऑफ ए•पी•जे• अब्दुल कलाम इन विंग्स ऑफ फायर। इंटरनेशनल जरनल ऑफ इंग्लिश रिसर्च। वॉल्यूम 2:5, पृ0–32–34
2. कौल, लोकेश (1997), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0।
3. दास, के (2015), ए स्टडी ऑन एजुकेशन सिस्टम एंड बैग्राउन्ड ऑफ ए•पी•जे• अब्दुल कलाम। वॉल्यूम–6:8
4. Kalam, A.P.J. abdul (2005) The life tree india: penguin books Indian pvt. Ltd.
5. http:// www.abdulkalam.com